BA-I
Paper-II
Unit-5

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com.

Topic:- Leibnitz: Pre established Harmony
(लाइबनित्ज : पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त।

लाइबनिज के अनुसार चिदणु गवाक्षहीन, छिद्ररहित तथा पूर्ण हैं। सभी चिदणु स्वतंत्र एवं क्रियाशील है। ये अपने आंतरिक नियमों से संचालित होते हैं। सृष्टि में एकरूपता व्यवस्था और नियमबद्धता बनाये रखने के लिए इन स्वतंत्र चिदणुओं में आपसी संबंध का होना आवश्यक है। लाइबनित्ज ने इन स्वतंत्र चिदणुओं में संबंध स्थापित करने के लिए एवं विभिन्न कोटि के चिदणुओं में आपसी समन्वय के लिए पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

लाइबनिज के अनुसार ईश्वर ने सभी चिदणुओं को स्वतंत्र एवं निरपेक्ष बनाया है। चिदणुओं को स्वतंत्र बनाते वक्त इस प्रकार का उन्होंने गुण स्थापित किया है कि परस्पर स्वतंत्र होते हुए भी एकता के सूत्र में बँधे रहे। चिदणुओं में यह एकता ईश्वर ने पहले ही स्थापित कर दिया है। इस सार्वभौम पूर्व स्थापित सामंजस्य नियम के कारण प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र एवं अलग - अलग चेतना के स्तर के बावजूद विश्व की एकता और सामंजस्य को बनाये रखता है। यह सामंजस्य चिदणुओं के स्वभाव में निहित है। इस प्रकार से संसार में नियम व्यवस्था एकता तथा सामंजस्य का कारण ईश्वर है। यह सामंजस्य ईश्वर ने सृष्टि से पूर्व ही स्थापित किया है। इसलिए इसे पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त कहते हैं।

Scanned with CamScanner

लाइबनित्ज के अनुसार विश्व में अनंत चिदणु हैं। प्रत्येक चिदणु पूर्ण एवं आत्मनिर्भर है। लेकिन प्रत्येक चिदणु में चेतना के स्तर पर भेद है। शरीर कम चेतन है आत्मा अधिक चेतन है। लाइबनित्ज दो अलग-अलग चिदणुओं में समन्वय स्थापित करने के लिए पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। जिस प्रकार से आर्केस्ट्रा में प्रत्येक वाद्ययंत्र का अपना अलग स्वर लहरी होता है। परन्तु इन वाद्ययंत्रों का विशिष्ट स्वर परस्पर सामंजस्यपूर्ण होता है। जिसके फलस्वरूप तान की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार से प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र होते हुए भी पारस्परिक सामंजस्य से अपने चेतन शक्ति का विकास करते हैं। प्रत्येक चिदणु का अंतिम लक्ष्य परम चिदणु (ईश्वर) की अवस्था प्राप्त करना है। इस प्रकार से चिदणुओं की विशिष्टता और अनेकता के होते हुए भी उनमें लक्ष्य की एकरूपता है। प्रत्येक चिदणु को परम चिदणु (ईश्वर) बनना है।

लाइबनित्ज पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त के आधार पर शरीर एवं आत्मा के संबंध की व्याख्या करते हैं। देकार्त का मानना है कि शरीर और आत्मा में अन्तःक्रिया होती है जिसके कारण शरीर आत्मा से तथा आत्मा शरीर से प्रभावित होता है। स्पिनोजा जड़ और चेतन में समानान्तरता सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। लाइबनित्ज जड़ पदार्थ की सत्ता को अस्वीकार करता है। वह सभी पदार्थ को चेतन ही मानता है, पदार्थों में भिन्नता का कारण उनके चेतना के स्तर में भिन्नता है। लाइबनित्ज आत्मा और शरीर में किसी प्रकार का भौतिक संबंध नहीं मानता है। वह दोनों में मात्र अध्यात्मिक संबंध मानता है। उसके अनुसार शरीर और आत्मा के संबंध का कारण ईश्वर है। ईश्वर ने शरीर चिदणु एवं आत्म चिदणु का निर्माण कर उसमें पहले से ही सामंजस्य स्थापित कर दिया है।

Scanned with CamScanner

दोनों स्वतंत्र एवं निरपेक्ष हैं। परन्तु सहचारी एवं एक दूसरे से संबद्ध हैं। दोनों एक ही विकास के दो स्तर हैं।

लाइबनिज सर्वचेतनवादी दार्शनिक हैं। विश्व के किसी भी पदार्थ को वह अचेतन नहीं मानते हैं। पत्थर से लेकर ईश्वर तक सभी में कम या अधिक मात्रा में चेतना मानते हैं। सबसे निम्न स्तर पर नग्न चिद्णु एवं सबसे उच्च स्तर पर पूर्ण चेतन चिद्णु ईश्वर है। जड़ एवं चेतन दोनों चिद्णु हैं इनमें केवल मात्रा का भेद है। इनके अनुसार शरीर का विकसित स्तर आत्मा तथा आत्मा का कम विकसित स्तर शरीर है। दोनों एक दूसरे को प्रतिबिम्बित करते हैं। शारीरिक जगत में प्रत्येक मानसिक जगत की घटनाओं की झलक मिलती है तथा मानसिक जगत में प्रत्येक शारीरिक जगत की घटनाओं की झलक मिलती है। वे शरीर और आत्मा को चेतना के स्तर पर भेद मानते हैं। दोनों का कार्य स्वतंत्र है। परन्तु दोनों सहयोगी तथा सहचारी हैं। दोनों में सहरूपता ईश्वर ने निर्माण के समय ही स्थापित कर दिया है। यही पूर्व स्थापित सामंजस्य है।

लाइबनिज चिद्णुओं को गवाक्षहीन मानता है इसका अर्थ यह नहीं है कि वे एक दूसरे से असम्बद्ध हैं। इसका अर्थ यह है कि चिद्णुओं में देश-काल के अन्तर्गत होने वाला यांत्रिक संबंध नहीं है। क्योंकि चिद्णु स्वरूपतः आध्यात्मिक (चेतन) है। इस प्रकार से पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त चिद्णुओं के बीच आध्यात्मिक (आंतरिक) संबंध का प्रतिपादन करता है। क्योंकि यह संबंध ईश्वर के द्वारा स्थापित किया गया है। इसके लिए वे घड़ीसाज का उपमा देते हैं। जिस प्रकार से दो घड़ियों के कांटे को घड़ीसाज इस निपुणता से बनाया है कि एक

के समान शरीर में भी समय होता है। इसके सिद्ध दोनों घड़ियों के समय में समानता घड़ीसाज के द्वारा पहले ही नियत कर दिया गया है। इसी प्रकार से शरीर और आत्मा दोनों के चिदणुओं में चेतना के स्तर पर भेद होते हुए भी ईश्वर ने दोनों में संबंध ईश्वर ने निर्माण से पहले ही नियत कर दिया है। इसी कारण इसे पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त कहा जाता है।

लाइबनिज के पूर्वस्थापित सामंजस्य सिद्धान्त के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि- लाइबनिज इस सिद्धान्त के आधार पर प्रकृति की भौतिक व्यवस्था एवं दैवी कृपा पर आधारित नैतिक व्यवस्था में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। लाइबनिज एक और ईश्वर को विश्व रूपी मशीन अर्थात चिदणुओं की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था का सृष्टिकर्ता मानता है। परन्तु वह ईश्वर को चिदणु का रचयिता नहीं मानता है। अतः प्रत्येक चिदणु ईश्वरीय चमत्कार से पूर्व भी विद्यमान है। इस बिन्दु पर दोष परिलक्षित है। चिदणुवाद एवं ईश्वरवाद दोनों सिद्धान्त साथ-साथ नहीं चल सकता है। यदि चिदणु आत्मनिर्भर एवं अनादि है तो इसकी रचना ईश्वर द्वारा नहीं हो सकता है। इस प्रकार से चिदणुवाद में ईश्वर को समन्वय करना असंगत है। फिर भी लाइबनिज का यह सिद्धान्त देकार्त एवं स्पिनोजा के विचारों में समन्वय करने का प्रयास किया है। आगे चलकर रसेल आदि दार्शनिकों ने इस सिद्धान्त की आलोचना की है इससे इस सिद्धान्त की उपयोगिता प्रमाणित है।

Scanned with CamScanner